Review Of Research
Vol. 3, Issue. 1, Oct. 2013
ISSN:-2249-894X
Available online at www. lbp.world

बाल–विकास को प्रभावित करने वाले कारकः एक समीक्षात्मक अध्ययन

कुमारी अंजना रमण[1] , डा० सरोज चौधरी[2]
[1]शोधार्थी , ल0ना0मि0वि0वि0,दरभंगा.
[2]व्याख्याता, स्माजशास्त्र विभाग , एम0के0 कॉलेज, ल0सराय,दरभंगा.

सारः

बाल–विकास का प्रत्यक्ष प्रभाव राष्ट्र के विकास पर पड़ता है। किसी भी राष्ट्र के लिए बाल–विकास उसका निवेश होता है। यदि उसका विकास समुचित ढ़ंग से नहीं होता तो इससे बालक तो प्रभावित होता ही है, राष्ट्र भी कमजोर पड़ता जाता है। इस सन्दर्भ में स्वामी विवेकानन्द ने कहा है– ''नैतिक बनो, वीर बनो, सम्पूर्ण ह्रदय वाले नैतिक तथा विकट परिस्थितियों से जूझनेवाले मनुष्य बनो।

प्रस्तावनाः

धर्म तत्वों से उलझकर मानसिक कठिनाईयों में मत पड़ो। कायर ही पाप करते हैं। वीर कभी पाप नहीं करते, मन से भी नहीं।'' अतः विकास की प्रक्रिया का उद्देश्य बालक को वीर, संकल्प शक्तिवान, दृढ़–प्रतिज्ञ बनाना है। इसकी तैयारी बालक को नहीं अपितु उनकी माँ को करनी पड़ती है। बालक के विकास को प्रभावित करने वाले प्रतिकारक इस प्रकार हैं–

1. **संस्कृति**–बालकों के विकास पर संस्कृति के प्रभाव का अध्ययन सर्वप्रथम डेनिस ने किया। उसने अमेरिका के रैड इण्डियन बच्चों एवं शेष सामान्य अमेरिकी बच्चों का अध्ययन किया। उसने यह परिणाम निकाला कि सांस्कृतिक भिन्नता होते हुए भी रैड इण्डियन बच्चों की सामाजिक तथा गत्यात्मक अनुक्रियायें (Responses) समान रहीं। शर्म, भय आदि का विकास समान आयु स्तर पर हुआ। उसने 40 श्वेत बच्चों के इतिहास का अध्ययन करके तुलना भी की। डेनिस का निष्कर्ष यह था–''शैशव काल की विशेषतायें सार्वभौम हैं एवं संस्कृति उनमें भिन्नता उत्पन्न करती हैं।''[1]
2. **परिवार में स्थान**–बालक का विकास इस बात पर निर्भर करता है कि परिवार में उसकी क्या स्थिति है? प्रायः देखा गया है कि पहला बालक अथवा अंतिम बालक विशेष लाड़–प्यार से पाला जाता है। सीखने की जहाँ तक बात है छोटे बच्चे अपने बड़े भाई–बहनों की अपेक्षा शीघ्र सीखते हैं। लेखक की बड़ी लड़की ने साईकिल चलाना आठ दिन में सीखा और अब साइकिल घर में आ गयी तो छोटी लड़की ने एक ही दिन में साईकिल चलाना सीख लिया। इस प्रकार हम देखते है। कि विकास तथा अभिवृद्धि को प्रभावित करने में इन सभी प्रतिकारकों का थोड़ा–बहुत योग रहता है और कोई भी व्यक्ति इससे अछूता नहीं रह सकता।[2]
3. बुद्धि–बुद्धि का बालक के विकास पर अधिक एवं महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यदि बालक बुद्धिमान है तो उसमें नवीन क्रियाओं को सीखने में तत्परता दिखाई देती है और उसमें परिपक्वता शीघ्र आती है। इसके विपरीत मन्द बुद्धि बालकों का शारीरिक विकास भले ही हो जाये, किन्तु उनके सामाजिक

सांवेगिक, नैतिक, मानसिक विकास की गति बहुत धीमी रहती है। टर्मन (Terman) ने बालक के पहली बार चलने तथा बात करने की अवस्था का अध्ययन किया। 13वें मास में चलने वाले प्रखर बुद्धि, 14वें मास में चलने वाले सामान्य, 22वें मास में चलनेवाले मन्दबुद्धि और 33वें मास में चलनेवाले मूढ़ (Idiots) बालक पाये गये। इसी प्रकार बोलने के अध्ययन में क्रमशः 11,16,34,51 मास में बोलने वाले बालक इसी क्रम से प्रखर बुद्धि सामान्य, मन्द एवं मूढ़ पाये गये।

4. **यौन**–यौन का बालक के विकास में महत्त्वपूर्ण योग होता है। इसका प्रभाव बालक के शारीरिक तथा मानसिक विकास पर पड़ता है। जन्म के समय लड़के, लड़कियों से आकार में बड़े होते हैं किन्तु लड़कियों की अभिवृद्धि तीव्रगति से होती हे। यौन–परिपक्वता लड़कियों में शीघ्र आती है। एवं वे अपना पूर्ण आकार लड़कों की अपेक्षा शीघ्र ग्रहण कर लेती हैं। लड़कों का मानसिक विकास लड़कियों की अपेक्षा देर से होता है।[3]
5. **शुद्ध वायु एवं प्रकाश**–जीवन के आरंभिक दिनों में बालक को शुद्ध वायु तथा प्रकाश की नितान्त आवश्यकता होती है। वायु तथा प्रकाश बालक के विकास के लिए अनिवार्य तत्व हैं। इनके अभाव से शरीर अक्षम हो जाता है।
6. **रोग एवं चोट**– बालक के सिर में चोट लगने पर उसका मानसिक विकास अवरूद्ध हो जाता है। यदि माता गर्भकाल में धूम्रपान तथा औषधि के रूप में टॉक्सिन (Toxin) का सेवन करती रही है तो भी उसका प्रभाव भी गर्भ में स्थित बालक पर पड़ता है। बालक यदि रोगी हो तो उसके भावी विकास पर दूषित प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।
7. **प्रजाति**– प्रजाति तत्वों का प्रभाव बालक के विकास पर देखा गया है। यद्यपि हरलॉक ने इस मत की पुष्टि नहीं की किन्तु जुंग प्रजातीय प्रभाव को बालक के लिए महत्त्वपूर्ण मानते हैं। भूमध्यसागरीय तट पर रहनेवाले बालकों का शारीरिक विकास शेष योरोप के बालकों की अपेक्षा शीघ्र होता है। नीग्रो बच्चे, श्वेत बच्चों की अपेक्षा 80% परिपक्वता शीघ्र प्राप्त करते हैं।
8. **ग्रन्थियों का स्राव**– ग्रन्थियों के अध्ययन ने विकास के क्षेत्र में नवीन परिणाम प्रस्तुत किये हैं। बालक के विकास पर ग्रन्थियों के अन्तःस्राव (Secretion) का प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव जन्मपूर्व तथा जन्म–पश्चात, दोनों दशाओं में होता है। उदाहरणार्थ, गले में थायरॉइड (Thyroid) ग्रन्थि के पास पैराथायराइड (Para-Thyroid) ग्रन्थियों द्वारा रक्त में कैलशियम का परिभ्रमण होता है। इसके दोष से माँस–पेशियों में अत्यधिक संवेदनशीलता आती है। मानसिक तथा शारीरिक वृद्धि के लिए थायरॉक्सिन (Thyroxin) जो कि थायरॉइड ग्रन्थियों से निकलता है, आवश्यक होता है। इसकी कमी से बालक मुढ़ हो जाता है। इसी प्रकार छाती (Chest) में स्थित थायमस (Thytmus) ग्रन्थि तथा मस्तिष्क के आकार पर स्थित पीनियल (Pineal) ग्रन्थियों से होनेवाले स्राव यौन विकास करते हैं। इसमें दोष आने से बालक में यौन परिपक्वता शीघ्र आ जाती है।
9. **पोषण**–बालक के विकास पर पोषण का पूरा–पूरा प्रभाव पड़ता है। बालक के लिए वह आहार ही पर्याप्त नहीं है अपितु उस आहार में निहित संतुलित पोषक तत्वों का होना भी अनिवार्य है। विटामिन, प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, लवण, चीनी आदि ऐसे तत्व हैं जो शरीर तथा मस्तिष्क दोनों के संतुलित विकास में योग देते हैं। पोषक तत्वों के अभाव में बालक का विकास संतुलित ढ़ंग से नहीं होता है।

आजकल के वर्त्तमान परिवेष में बहुत स्वयंसेवी संगठन भी बाल विकास हेतु विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम चला रहे है। निष्चित ही आने वाले दिनों में भारत में बाल–विकास कार्यक्रम के तहत चौमुखी विकास होगा।

संदर्भ सूचीः–

1. योजना, मार्च 1996
2. योजना, अप्रैल 1995
3. योजना, मई 2002